REET 2025
LEVEL-1&2
वंदन बैच
संस्कृत
समास
Part -2
LIVE
15-01-2025 03:00 PM

REET 2025 L-

TIME TABLE
REET 2025
LEVEL-1 & 2
वंदन बैच
MATHS L-1 07AM
GEOGRAPHY L-2 10 AM
हिंदी L-1&2 11 AM
CDP L-1&2 02 PM
ENGLISH L-1&2 03 PM
संस्कृत L-1&2 03 PM
EVS L-1 04 PM
PHYSICS L-2 04 PM
MATHS L-2 05 PM
POLITY L-2 07 PM
CHEM+ BIO L-2 07 PM
HISTORY L-2 08 PM
Registration Starts from
23rd DEC
Classes Start from
26th DEC
JOIN US ON
DOWNLOAD THE RWA APP NOW
Google Play

समास

समास : सम्+अस्+घञ् से निष्पन्न हुआ है।

यहाँ अस् धातु का अर्थ क्षेपण (फेंकना, चलाना) होता है। समास का अर्थ है, संक्षिप्त।

समसनम् समास : अनेक पदों का एकीभूत होना समास है अर्थात् जब अनेक पद मिलकर एक पद बन जाते हैं तब वह समास कहलाता है।

विग्रह दो प्रकार का होता है-

(1) लौकिक

(2) अलौकिक

लौकिक : विभक्ति युक्त पदों के द्वारा समस्त पद का अर्थ बतलाना जो प्रयोग योग्य होता है। राजपुरुषः = राज्ञः पुरुषः

लौकिक रामस्य पुत्रः (संबंध तत्पुरुष)

अलौकिक विग्रह राम ङस् पुत्र सु X REET X

अलौकिक विग्रह : प्रकृति प्रत्यय को अलग अलग कर दिखलाना।

अलौकिक विग्रह प्रयोग के योग नहीं होता है।

राजन्+स् प्रत्यय लौकिक-रामलक्ष्मणौ-रामश्च लक्ष्मणश्च

अलौकिक- राम+सु लक्ष्मण+सु

समास पांच प्रकार का होता है-

(1) केवल समास

(2) अव्ययीभाव

(3) तत्पुरुष

(4) द्वन्द्व समास

(5) बहुव्रीहि समास

पद की प्रधानता के आधार पर समास चार प्रकार के हैं-

(1) अव्ययीभाव समास

(2) तत्पुरुष समास- (i) कर्मधारय (ii) द्विगु

(3) द्वन्द्व समास

(4) बहुव्रीहि समास

पद की प्रधानता के आधार पर केवल समास को नहीं माना है।

केवल समास

1. सूत्र : विशेष संज्ञा विनिर्मुक्त : केवल समास :

समासों में जिसको रखना संभव नहीं होता है, अथवा तत्पुरुष आदि संज्ञाओं में से जहाँ कोई संज्ञा नहीं होती है, उसे केवल समास कहते हैं।

2. सह सुपा :

सुबन्त का सुबन्त के साथ समास होता है। सुबन्त का समर्थ के साथ समास होता है। इसमें दोनों पदों का अर्थ प्रधान ही रहता है।

पहचान : इसमे प्राय: विभक्ति का लोप नहीं होता है।

उदा: भूतपूर्वः पूर्वम् भूतः इति भूतपूर्वः

अलौकिक विग्रह-पूर्व अम्, भूत्+सु

अदृष्ट पूर्वः - पूर्वम् अदृष्टः इति

अभूतपूर्व : पूर्वम् अभूतः इति

नैक : न एक : इति

नैकधा - न एकधा इति

REET 2025 L-1&2 संस्कृत वंदन बैच

अव्ययीभाव समास

अव्यय की तरह भाव अर्थात् अव्यय के समान जिसका रूप नहीं चलता है।

- **सूत्र : प्रायेण पूर्वपद प्रधानोऽव्ययीभावः** जिस समास का प्रायः पूर्वपद प्रधान होता है और समस्त पद अव्यय बन जाता है, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं।

अव्ययीभाव शब्द का यौगिक अर्थ होता है जो अव्यय न हो उसका अव्यय बन जाता है। यहाँ पूर्वपद अव्यय होता है और उत्तर पद संज्ञा। समास होने पर अव्यय बन जाता है। यहाँ नपुंसकलिंग एक वचन में ही रूप होता है।

कृष्णः = उपकृष्णम्

पहचान : पहला पद अव्यय होता है। अव्यय में उपसर्ग भी शामिल है।

उपगङ्गम्-उप+गङ्ङ्गम्

अव्ययीभाव समास में उपसर्ग या अव्यय लगा होता फलम् वारि, जगति, दधि अंत में म् और छोटी इ की मात्रा लगी रहती है।

अकारान्त और आकारान्त शब्द अन्त में रहने पर सु के स्थान पर अम् कर दिया जाता है अर्थात् अन्त में अम् लग जाता है।

गंगाया: समीपम्-उपगङ्गम्

इकरान्त उकारान्त और हलन्त शब्दों के रहने पर प्राय: विभक्ति का लोप हो जाता है।

अधिहरि - हरौ इति

- बड़ी ई, ऊ, ऋ, दीर्घ शब्द के स्थान पर ह्रस्व हो जाता है।
- उपनदि-नद्या : समीपम्
- उपवधु - वध्वाः समीपम्
- सूत्र : अव्ययी भाव- तत्पुरुष समास से पूर्व तक अव्ययीभाव समास का अधिकार है इस सूत्र से अव्ययीभाव समास होता है।

अव्ययं विभक्ति... वचनेषु: - विभक्ति, समीप आदि अर्थों में विद्यमान अव्यय का सुबन्त के साथ समास होता है और वह अव्ययीभाव समास कहलाता है।

1. विभक्ति अर्थ में :

सप्तमी विभक्ति के अर्थ में अधि अव्यय का प्रयोग होता है। विग्रह में उत्तर पद में सप्तमी विभक्ति लगाकर आगे इति शब्द लिखा जाता है।

ए, ऐ हो, तो (सामासिक पद के अन्त में) इसके स्थान पर इ हो जाता है ओ, औ हो तो उ हो जाता है।

उपवधु-वध्वाः समीपम्

उपगु-गो : समीपम्

उपनु (नौ मूल शब्द) - नावः समीपम्

समस्तपद	विग्रह	अर्थ
अधिहरि	हरौ इति	हरि के विषय में
अधिगोपम्	गोपे इति	ग्वाले के विषय में
अधिशिवम्	शिवे इति	शिव के विषय में
अध्यात्मन्	आत्मनि इति	आत्मा के विषय में

समस्तपद	विग्रह	अर्थ
अधिगङ्गम्	गङ्गायाम् इति	गंगा के विषय में
अधिगृहम्	गृहे इति	गृह के विषय में
अधिलतम्	लतायाम् इति	लता के विषय में
अधिधर्मम्	धर्मे इति	धर्म के विषय में
अधिगुरु	गुरौ इति	गुरु के विषय में

समस्तपद	विग्रह	अर्थ
अधिराजम्	राज्ञि इति	राजा के विषय में
अधिव्यासम्	व्यासे इति	व्यास के विषय में

2. समीप अर्थ में : यहाँ उप के साथ सुबन्त का समास होता है तथा विग्रह में षष्ठी का प्रयोग होता है।

उपकृष्णम्	कृष्णस्य समीपम्	कृष्ण के पास
उपगङ्गम्	गंङ्ङ्गाया: समीपम्	गंगा के पास
उप विष्णु	विष्णो: समीपम्	विष्णु के पास
उपयमुनम्	यमुनाया: समीपम्	यमुना के पास
उपनदि	नद्या: समीपम्	नदी के पास
उपगुरु	गुरो: समीपम्	गुरु के पास
उपकण्ठम्	कण्ठस्य समीपम्	गले के पास
उपराजम्	राज्ञ: समीपम्	राजा के पास

उपसिंहम्	सिंहस्य समीपम्	सिंह के पास
उपनगरम्	नगरस्य समीपम्	नगर के पास

3. समृद्धि अर्थ में समृद्धि अर्थ में "सु" अव्यय का प्रयोग होता है (विग्रह में -षष्ठी विभक्ति लगाकर "समृद्धि" शब्द बाद में लिखा जाता है)

सुमद्रम्	मद्राणाम् समृद्धिः	मद्रास की समृद्धि
सुबंगम्	बंगानाम् समृद्धिः	बंगाल की समृद्धि
सुभारतम्	भारतानां समृद्धिः	भारतीयों की समृद्धि
सुविद्यम्	विद्यायाः समृद्धिः	विद्या की समृद्धि
सुविप्रम्	विप्राणां समृद्धिः	ब्राह्मणों की समृद्धि
स्वार्यम्	आर्याणाम् समृद्धिः	आर्यों की समृद्धि
सुशूद्रम्	शूद्राणाम् समृद्धिः	शूद्रों की समृद्धि

4. व्यृद्धि अर्थ में - दरिद्रता या नाश अर्थ में दुर् अव्यय का प्रयोग होता है (विग्रह में उत्तर पद में षष्ठी विभक्ति लगाकर बाद में व्यृद्धि शब्द लिखा जाता है)

दुर्यवनम्	यवनानां व्यृद्धिः	यवनों के ऐश्वर्य का नाश
दुर्हणम्	हूणानां व्यृद्धिः	हुणों के ऐश्वर्य का नाश
दुश्चोलम्	चोलानां व्यृद्धिः	चोलों के ऐश्वर्य का नाश

5 . अभाव अर्थ में - अभाव अर्थ में निर् अव्यय का प्रयोग होता है (विग्रह में उत्तर पद में षष्ठी विभक्ति लगाकर पश्चात् अभाव शब्द लिखा जाता है)

निर्मक्षिकम्	मक्षिकाणाम् अभाव:	मक्खियों का अभाव
निर्जनम्	जनानाम् अभाव:	लोगों का अभाव
निर्द्वन्द्वम्	द्वन्द्वस्य अभाव:	जोड़ों का अभावमा
निर्भयम्	भयस्य अभाव:	भय का अभाव
निर्दोषम्	दोषाणाम् अभाव:	दोषों का अभाव
- निर्गोपम्	गोपानाम् अभाव:	ग्वालों का अभाव
निर्विकारम्	विकाराणाम् अभाव:	विकारों का अभाव
निर्जीवम्	जीवानाम् अभाव:	जीवों का अभाव

निष्फलम्	फलानाम् अभावः	फलों का अभाव
निर्गुणम्	गुणानाम् अभावः	गुणों का अभाव

6. अत्यय अर्थ में अत्यय का नाश अर्थ में अति अत्यय - के साथ समास होता है (विग्रह में उत्तर पद में षष्ठी विभक्ति लगाकर पश्चात् अत्ययः शब्द लिखा जाता है)

अतिहिमम्	हिमस्य अत्ययः	हिम का ध्वंस
अतिधनम्	धनस्य अत्ययः	धन का ध्वंसम
अतिशीतम	शीतस्य अत्ययः	शीत का ध्वंसत
अतिपुष्पम्	पुष्पाणाम् अत्ययः	फुलो का ध्वंस
अतियौवनम्	यौवनस्य अत्ययः	यौवन का ध्वंस
अतिवसन्तम्	वसन्तस्य अत्ययः	बसन्त का ध्वंसी

7. असम्प्रति के अर्थ में यहाँ अति उपसर्ग के साथ समास होता है

अतिनिद्रम्	निद्रा सम्प्रति न युज्यत	नींद का अनौचित्य
अतिकलहम्	कलहं सम्प्रति न युज्यते	कलह का अनौचित्य
अतिहसनम्	हसनम् सम्प्रति न युज्यते	हसने का अनौचित्य
अतिरोदनम्	रोदनम् सम्प्रति न युज्यते	रोने का अनौचित्य

8. शब्द प्रादुर्भाव (प्रकाश) या उच्चारण- यहाँ इति अव्यय के साथ समास होता है।

(विग्रह में षष्ठी विभक्ति लगाकर बाद में प्रादुर्भाव शब्द लिखा जाता है)

इति हरि	हरिशब्दस्य प्रादुर्भावः	हरि शब्द का प्रादुर्भाव
इति विष्णु	विष्णुशब्दस्य प्रादुर्भावः	विष्णु शब्द का प्रादुर्भाव
इतिरामम्	राम शब्दस्य प्रादुर्भावः	राम शब्द का प्रादुर्भाव
इतिवेदम्	वेदशब्दस्य प्रादुर्भावः	वेद शब्द का प्रार्दुभाव
इति व्यासम्	व्यासशब्दस्य प्रादुर्भावः	व्यास शब्द का प्रार्दुभाव

9. पश्चात् अर्थ में- पश्चात् अर्थ में अनु अव्यय के साथ अव्ययीभाव समास होता है।

(विग्रह में षष्ठी वि. लगाकर बाद में 'पश्चात्' शब्द लिखा जाता है)

अनुरथम्	रथस्य पश्चात्	रथ के पीछे
अनुहरि	हरेः पश्चात्	हरि के पीछे
अनुलोकम्	लोकस्य पश्चात्	लोक के पीछे
अनुजनम्	जनस्य पश्चात्	आदमी के पीछे
अनुपठनम्	पठनस्य पश्चात्	पढ़ने के पीछे

10. योग्यता (अनुरूप) उचित : योग्यता अर्थ में अनु अव्यय के साथ अव्ययीभाव होता है।

(विग्रह में उत्तर पद में षष्ठी विभक्ति लगाकर बाद में योग्यम् शब्द लिखा जाता है)

अनुरूपम्	रूपस्य योग्यम्	रूप के योग्य
अनुगुणम्	गुणस्य योग्यम्	गुण के योग्य
अनुसुखम्	सुखस्य योग्यम्	सुख के योग्य
अनुदुःखम्	दुःखस्य योग्यम्	दुःख के योग्य
अनुपुष्पम्	पुष्पस्य योग्यम्	पुष्प के योग्य
अनुशीलम्	शीलस्य योग्यम्	शील के योग्य

11. वीप्सा (आम्रेडित संज्ञा) : आवृति (दोहराना) 'प्रति' अव्यय के साथ अव्ययीभाव समास होता है।

(विग्रह में उत्तर पद को द्वितीया विभक्ति लगाकर तथा द्वित्व करके (दो बार लिखकर) प्रति शब्द बाद में लगाते हैं

प्रतिदिनम्	दिनं दिनं प्रति	हर दिन में
प्रतिक्षणम्	क्षणं क्षणं प्रति	हर क्षण में
प्रतिरूपम्	रूपम् रूपम् प्रति	हर रूप में
प्रत्यहं	अनं अनं प्रति	प्रत्येक दिनों में
प्रत्येकं	एकं एकं प्रति	एक-एक में

प्रतिमासम्	मासं मासं प्रति	हर मास में

REET 2025 L - 1&2 संस्कृत वंदन बैच

12. अनतिक्रम्य (अतिक्रमण नहीं करके): यथा अव्यय के समास होते हैं

(विग्रह में उत्तर पद में द्वितीया विभक्ति लगाकर बाद में "अनतिक्रम्य" शब्द लगाया जाता है।)

यथाशक्ति	शक्तिम् अनतिक्रम्य	शक्ति का उल्लंघन न करके
यथाभक्ति	भक्तिम् अनतिक्रम्य	भक्ति का उल्लंघन न करके
यथाबलम्	बलम् अनतिक्रम्य	बल का उल्लंघन न करके
यथाकालम्	कालम् अनतिक्रम्य	काल का उल्लंघन न करके
यथागुणम्	गुणम् अनतिक्रम्य	गुण का उल्लंघन न करके
यथाधर्मम्	धर्मम् अनतिक्रम्य	धर्म का उल्लंघन न करके

यथाशास्त्रम्	शास्त्रमनतिक्रम्य	शास्त्र का उल्लंघन न करके

13. आनुपूर्व्य अर्थ में : क्रम के अर्थ में अनु अव्यय के साथ अव्ययीभाव समास होता है।

(विग्रह में उत्तर पद में षष्ठी विभक्ति लगाकर बाद में "आनुपूर्व्येण" शब्द लिखा जाता है)

अनुज्येष्ठम्	ज्येष्ठस्यानुपूर्व्येण	ज्येष्ठ के क्रम से
अनुयुवकम्	युवकस्यानुपूर्व्येण	युवक के क्रम से

14. यौगपद्य के अर्थ में : युगपद के अर्थ में "सह" अव्यय के साथ अव्ययीभाव समास होता है। (विग्रह में उत्तर पद में तृतीया विभक्ति लगाकर बाद में युगपद् शब्द लिखा जाता है।)

सचक्रम्	चक्रेण युगपद्	पहिए के साथ
सजन्म	जन्मना युगपद्	जन्म के साथ

15. सादृश्य अर्थ में : सादृश्य के अर्थ में "सह" अव्यय के साथ अव्ययीभाव समास होता है। काल को छोड़कर तथा सह कोस आदेश हो जाता है। (विग्रह में उत्तर पद से षष्ठी विभक्ति लगाकर बाद में "सादृश्यम्" शब्द लिखा जाता है।)

सहरि	हरे : सादृश्यम्	हरि के समान
ससखि	सख्याः सदृशः	सखि""

16. सम्पत्ति अर्थ में : सह के साथ समास होता है।

सक्षत्रम्	क्षत्राणां सम्पत्तिः
सजीवम्	जीवस्य सम्पत्तिः
सविप्रम्	विप्राणाम् सम्पत्तिः

- समाहार शब्द का प्रयोग द्विगु समास में होता है।
- नदीवाचक शब्द के साथ संख्या वाचक शब्द आने पर अव्ययीभाव होगा।

पञ्चगङ्गम्	पञ्चानाम् गङ्गानाम् समाहारः
द्वियमुनम्	द्वयोः यमुनयोः समाहारः इति
त्रिगङ्गम्	तिसृणाम् गङ्गानाम् समाहारः
त्रिगोदावरि	तिसृणाम् गोदावरीणां समाहारः

तत्पुरुष समास

जिस समस्त पद में उत्तर पद का अर्थ प्रधान हो, वह तत्पुरुष समास कहलाता है।

जैसे- हरित्रातः

यहाँ 'त्रातः' प्रधान है।

तत्पुरुष : बहुब्रीहि समास से पूर्व तक तत्पुरुष का अधिकार होता है।

द्विगुश्च : द्विगु की भी तत्पुरुष संज्ञा होती है।

तत्पुरुष शब्द का विग्रह

(1) तस्य पुरुषः (बहुव्रीहिः)

(2) सः पुरुषः (तत्पुरुषः)

सूत्र :

प्रायेण उत्तर पदार्थ प्रधानः तत्पुरुष :

जिस समास में उत्तर पद प्रधान होता है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। तत्पुरुष समास में पूर्व पद विशेषण वाची और द्वितीय पद संज्ञावाची होता है, तो कहीं पर विशेष्य भी होता है।

- तत्पुरुष समास दो प्रकार के होते हैं-

(1) व्यधिकरण तत्पुरुष

(2) समानाधिकरण तत्पुरुष

• व्यधिकरण तत्पुरुष :

जहाँ विग्रह की विभक्तियाँ अलग-अलग होती हैं, जैसे राज्ञः पुरुषः -

राजपुरुषः

व्यधिकरण तत्पुरुष के अन्तर्गत द्वितीया विभक्ति से लेकर सप्तमी विभक्ति तक प्रयोग होता है।

• समानाधिकरण तत्पुरुष :

जहाँ विभक्तियाँ एक समान होती हैं जैसे: कृष्णसर्पः कृष्णः सर्पः

समानाधिकरण तत्पुरुष के अन्तर्गत कर्मधारय द्विगु, प्रादि, गति, उपपद, और अलुक् समास का प्रयोग होता है।

द्वितीया तत्पुरुष : जहाँ पर प्रथम पद द्वितीया विभक्ति में होता है, वहाँ पर द्वितीया तत्पुरुष समास होता है। श्रित, अतीत, पतित, गत, अत्यस्त, प्राप्त, आपन्न, गामी, बुभुक्षु इन अर्थों में द्वितीया तत्पुरुष होता है।

REET 2025 L-1&2 संस्कृत वंदन बैच

कृष्णश्रितः	कृष्णम् श्रितः इति	कृष्ण से आश्रित
दुःखातीत	दुःखम् अतीतः इति	दुःख से परे
शोकपतितः	शोकं पतितः इति	शोक में पड़ा हुआ
प्रलयगतः	प्रलयं गतः इति	प्रलय में गया हुआ
ग्रामगतः	ग्रामं गतः इति	गाँव को गया हुआ
नरकपतितः	नरकं पतित : इति	नरक में पड़ा हुआ
कूपपतितः	कूपं पतित इति	कुए में पड़ा हुआ
ग्रामात्यस्तः	ग्रामम् अत्यस्तः इति	गाँव के घर पर पहुँचा हुआ
भयापन्नः	भयम् आपन्नः	भय पाने वाला
अन्नबुभुक्षुः	अन्नं बुभुक्षुः	अन्न का भूखा

सुखप्राप्तः	सुखं प्राप्तः	सुख को प्राप्त
ग्रामगमी	ग्रामं गामी	गाँव को जाने वाला